

मिलेट्स की खेती से ग्रामीण विकास की संभावनाएँ



**पंकज कुमार, रोहित कुमार*,
आशीष पाल, नंदिनी सिंह,
चंदन सिंह.**

शोध छात्र, सरदार वल्लभभाई
पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, मेरठ
*जीएलए यूनिवर्सिटी मथुरा

*अनुरूपी लेखक
रोहित कुमार*

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ आज भी देश की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। बढ़ती जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी तथा किसानों की आय में स्थिरता जैसी चुनौतियों के बीच कृषि क्षेत्र को अधिक टिकाऊ और लाभकारी बनाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ऐसे समय में मिलेट्स या मोटे अनाज, जिन्हें वर्तमान में "श्री अन्न" के नाम से जाना जाता है, ग्रामीण विकास के एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरकर सामने आए हैं। ये फसलें न केवल पोषण सुरक्षा प्रदान करती हैं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने, रोजगार सृजन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मिलेट्स का परिचय

मिलेट्स छोटे दाने वाले अनाजों का समूह है जिसमें बाजरा, ज्वार, रागी, कोदो, कुटकी, सांवा, कंगनी और चेना आदि प्रमुख फसलें शामिल हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये कम पानी, कम उर्वरक तथा कम लागत में भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं। भारत प्राचीन काल से मिलेट्स उत्पादन का प्रमुख केंद्र रहा है और आज भी विश्व के सबसे बड़े उत्पादक देशों में शामिल है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मिलेट्स का महत्व

ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश किसान छोटे और सीमांत वर्ग के हैं, जिनके पास सीमित संसाधन उपलब्ध होते हैं। ऐसी परिस्थितियों में मिलेट्स की खेती किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। इन फसलों की उत्पादन लागत अपेक्षाकृत कम होती है तथा सूखा और प्रतिकूल मौसम की स्थिति में भी इनका उत्पादन स्थिर रहता है। इससे किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्राप्त होती है और कृषि जोखिम कम होता है।

किसानों की आय बढ़ाने में भूमिका

मिलेट्स की बढ़ती मांग किसानों के लिए नए अवसर उत्पन्न कर रही है। सरकार द्वारा श्री अन्न को बढ़ावा दिए जाने के बाद इनके बाजार का विस्तार हुआ है। वर्तमान में मिलेट्स से तैयार विभिन्न उत्पाद जैसे आटा, दलिया, बिस्कुट, कुकीज़,

नूडल्स, पास्ता और स्वास्थ्य पेय बाजार में लोकप्रिय हो रहे हैं। इससे किसानों को अपने उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त हो रहा है और उनकी आय में वृद्धि हो रही है।

रोजगार सृजन की संभावनाएँ

मिलेट्स आधारित प्रसंस्करण उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकते हैं। उत्पादन से लेकर प्रसंस्करण, पैकेजिंग, परिवहन और विपणन तक विभिन्न स्तरों पर रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। यदि गांव स्तर पर लघु एवं कुटीर उद्योग स्थापित किए जाएँ, तो स्थानीय युवाओं को रोजगार मिल सकता है और ग्रामीण पलायन में कमी लाई जा सकती है।

महिला सशक्तिकरण में योगदान

मिलेट्स आधारित खाद्य उत्पादों के निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। स्वयं

सहायता समूह (SHGs) मिलेट्स से विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार कर बाजार में बेच सकते हैं। इससे महिलाओं की आय बढ़ेगी, उनकी आर्थिक भागीदारी मजबूत होगी और ग्रामीण समाज में उनका सशक्तिकरण होगा।

पोषण सुरक्षा और स्वास्थ्य लाभ

ग्रामीण क्षेत्रों में कुपोषण एक गंभीर समस्या है। मिलेट्स में प्रोटीन, फाइबर, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इनके नियमित सेवन से कुपोषण, एनीमिया तथा अन्य पोषण संबंधी समस्याओं को कम किया जा सकता है। इस प्रकार मिलेट्स ग्रामीण स्वास्थ्य सुधार में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

जलवायु परिवर्तन और मिलेट्स

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन कृषि क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। अनियमित वर्षा, सूखा, अत्यधिक तापमान और जल संकट के कारण कई पारंपरिक फसलें प्रभावित हो रही हैं। मिलेट्स ऐसी परिस्थितियों में भी बेहतर उत्पादन देने की क्षमता रखते हैं। इसलिए इन्हें जलवायु-स्मार्ट फसल माना जाता है। इनकी खेती ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि स्थिरता बनाए रखने में सहायक है।

पर्यावरण संरक्षण में योगदान

मिलेट्स की खेती में कम पानी और कम रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता होती है। इससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है और पर्यावरणीय प्रदूषण कम होता है। साथ ही, ये फसलें मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने में भी सहायक हैं। इसलिए मिलेट्स आधारित कृषि प्रणाली पर्यावरण-अनुकूल कृषि विकास को प्रोत्साहित करती है।

मूल्य संवर्धन एवं विपणन की संभावनाएँ

मिलेट्स के मूल्य संवर्धन द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में नए उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं। आधुनिक उपभोक्ताओं में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता

के कारण मिलेट्स आधारित उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और संगठित बाजारों के माध्यम से ग्रामीण उत्पादकों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच मिल सकती है।

सरकारी पहल और समर्थन

भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारें मिलेट्स के उत्पादन और उपभोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ संचालित कर रही हैं। किसानों को उन्नत बीज, प्रशिक्षण, प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना तथा विपणन सुविधाओं के माध्यम से सहायता प्रदान की जा रही है। इन प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्रों में मिलेट्स आधारित विकास को गति मिल रही है।

चुनौतियाँ

यद्यपि मिलेट्स की संभावनाएँ व्यापक हैं, फिर भी कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं। किसानों में जागरूकता की कमी, प्रसंस्करण सुविधाओं का अभाव, सीमित बाजार संपर्क और आधुनिक तकनीकों की कमी इनके विस्तार में बाधक हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी एवं निजी क्षेत्र के संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं।

निष्कर्ष

मिलेट्स की खेती ग्रामीण विकास के लिए एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो सकती है। यह किसानों की आय बढ़ाने, रोजगार सृजन, महिला सशक्तिकरण, पोषण सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जलवायु परिवर्तन की वर्तमान परिस्थितियों में मिलेट्स भविष्य की टिकाऊ कृषि प्रणाली का आधार बन सकते हैं। यदि इनके उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन को प्रोत्साहन दिया जाए, तो मिलेट्स ग्रामीण भारत की आर्थिक और सामाजिक समृद्धि के नए द्वार खोल सकते हैं। अतः ग्रामीण विकास की रणनीतियों में मिलेट्स को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए।